शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2013

# समकालीन कवि 'अरुण कमल' के काव्य में पर्यावरणीय बोध

**डॉ0 भूपेन्द्र हरदेनिया**
**नेहरू डिग्री कालेज, सबलगढ़**
**जिला मुरैना, मध्यप्रदेश**

## शोध संक्षेप

*समकालीन कविता का समय एक तरह से औद्योगिक क्रांति का समय था, अर्थात जिस समय समकालीन कविता पुष्पित और पल्लवित हो रही थी, उसी समय हमारे देश में ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में औद्योगीकरण और वैज्ञानिकीकरण का दौर अपने चरम पर था। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अगर हम बात करें तो कहा जा सकता है कि यह दौर औद्योगीकरण और वैज्ञानिकीकरण के चरम उत्थान का और पर्यावरणीय ह्रास के चरमोत्कर्ष का काल है। आज चारों तरफ पर्यावरण सुरक्षा और संरक्षा जैसे शब्द हमारे कानों में गूंज रहे हैं। वह इसलिए क्यों कि प्रकृति का हमने इतना दोहन किया है, उसे इस हद तक हानि पहुंचाई है, आज वह अपने साथ–साथ सम्पूर्ण जीव–जगत के विनाश का कारण बन सकती है। मनुष्य ने जितना प्रकृति को नुकसान पहुंचाया है, प्रकृति उससे कहीं ज्यादा उसे नुकसान पहुँचा सकती है, अब मनुष्य को अपनी चिंता सताने लगी है, उसे होने वाली क्षति का आभास होने लगा है। इसी की चिंता समकालीन कवि अरुण कमल को भी सता रही है,। पर्यावरणीय चेतना उनके काव्य में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है, जिसे हम प्रस्तुत शोध–पत्र में देखा जा सकता है।*

प्रकृति के निर्लज्ज दोहन और प्राणीमात्र के शोषण ने न केवल मानव का जीवन त्रस्त कर दिया है वरन् मानव उत्पादों और कार्यों से दूसरे जीवों का जीवन भी संकटमय हो गया है। अब पंछी नीड़ नहीं बनाते, कलरव मूक हो गया है और जंगल समाप्त होने की कगार पर हैं।

औद्योगिक क्रांति की होड़ ने मानव शक्ति के प्रयोग और संसाधनों के विकास के लिए प्रकृति के दोहन का जो कुचक्र आरम्भ किया उससे सम्पूर्ण पर्यावरण प्रभावित हुआ है।

वैज्ञानिकों ने पर्यावरण को मुख्यतः भू–मण्डल, जलमण्डल, वायुमण्डल एवं जीव मण्डल इन चार भागों में बांटा है। आज ये सभी दूषित हो गए हैं। इनको प्रदूषित करने का उत्तरदायित्व मानव का है। वैज्ञानिक खोजों से यह सिद्ध हो चुका है कि मानव ही एकमात्र ऐसा प्राणी है जो सबसे ज्यादा प्रदूषण करता है, लेकिन वह अपने द्वारा किये गये प्रदूषण की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता है।

वैज्ञानिक परीक्षणों के लिए न केवल जल, थल, और वायुमण्डल ही दूषित किया जाता है बल्कि कितने ही निरीह प्राणियों को प्रतिवर्ष यातना दी जाती है। आज विश्व कार्बनिक और अकार्बनिक कूड़े के ढेर पर बैठा है। जिसमें कभी भी विस्फोट हो सकता है। इसी चिंता की अभिव्यक्ति समकालीन कवि अरुण कमल के काव्य में देखी जा सकती है। समकालीन कवि अरुण कमल ने वर्तमान युग के अपने सम्पूर्ण परिवेश को अपने काव्य में प्रतिबिम्बित किया है, अतः उनकी कविता को तत्कालीन परिवेश से जुड़ी हुई युग–बोध की कविता माना जा सकता है।

अरुण कमल की कविताओं में जहां वर्तमान पर्यावरणीय दुर्दशा के प्रति गहरा क्षोभ है, तो वहीं उसके भविष्य के प्रति गहरी आस्था भी है। उनकी अनेक कविताओं जैसे–'नए इलाके', 'अपनी केवल धार', 'सबूत', 'पुतली संसार' में पर्यावरणीय बोध और उसकी चिंता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2013

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून की उक्ति वर्तमान संदर्भ में अधिक चरितार्थ हो रही है। क्योंकि जल स्रोतों का हमने जिस प्रकार दोहन किया, वह तो सब जानते ही हैं, उसके कारण हमें पानी की कितनी बड़ी समस्या से गुजरना पड़ रहा है, और अगर यही हाल रहा तो वह दिन दूर नहीं, जब हमें जल त्रासदी से गुजरना पड़ेगा, यहां तक कि तृतीय विश्व युद्ध की परिकल्पना भी पानी के लिए ही की गई है। केवल मनुष्य जीवन से ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण पर्यावरणीय जीव–जगत से पानी का अटूट संबंध है, हम पानी पर पूर्ण रूप से निर्भर हैं। इसी जल के पवित्र रूप को हम मां गंगा के रूप में या भागीरथी के रूप में भी जानते हैं। गंगा या भागीरथी के साथ, हिन्दुस्तान के लोगों का अति महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध है। गंगा उनके लिए मां है, पितृ तर्पण का उदक है, सांस्कृतिक विरासत का चिह्न है, सर्वस्व है। लेकिन आज इसी गंगा मां का अस्तित्व खतरे में पड़ा हुआ है। गंगा आज गंदगी का ढेर बनती जा रही है, वैज्ञानिकों ने तो यहां तक घोषणा कर दी है कि आने वाले कुछ वर्षों में गंगा का अस्तित्व बिल्कुल ही समाप्त हो जाएगा। गंगा की यह जो दशा है, इस पर कवि का ह्रदय दुःखी हो जाता है, और उसकी वैखरी से यह वेदना निकलती है–**"असम्भव/असम्भव है सोचना/जिनकी मिट्टी गंगा–पानी से गुंथी है/उनके लिए असम्भव है सोचना कि एक दिन/गंगा के ऊपर उड़ता हुआ पक्षी/विष की धाह से झुलस जाएगा/कि एक दिन गंगा/नहीं रहेगी और फिर गंगा/वे रख आए हैं गंगा के द्वार पर विषपात्र/षड्यन्त्र/गंगा के साथ भी षड्यन्त्र/हिमालय के साथ/पृथ्वी नक्षत्र समस्त मण्डल के साथ"1**

यहां कवि का तात्पर्य यही है कि जिसे हम मां का दर्जा देते है, वही गंगा आज विलुप्ती के कगार पर है। इसको बचाने के जितने भी सरकारी प्रयास किये जा रहे हैं, वह केवल एक कागजी कार्रवाई है, एक छलावा है, नेताओं को पैसा खाने का माध्यम है। गंगा के बचाव के लिए आज कई आयोग गठित किए गये, लेकिन नतीजा सिफर रहा। यह अपनी धरती के षड्यंत्र नहीं तो और क्या है।

नदियां जलधारा ही नहीं, बल्कि प्राणधारा हैं, यह धरती मां की नाड़ियों में बहने वाली जीवन की अमृतधारा है। कवि के अनुसार जहां कल पानी था, वहां अब रेत ही रेत है। अतः उनके 'शब्दकोश' में इसके लिए सबसे उपयुक्त शब्द 'श्मशान' है, आज नदियों की दशा अत्यंत दयनीय है, गंगा, सिंधु, नील, पंपा आदि नदियां अत्यंत नाजुक स्थिति में हैं–**"किसे है याद कल यहां कितना पानी था/जहां डूबी थी नौका वहां/एक बच्चा छपकता दौड़ता जा रहा है/पानी के नीचे चमकता बालू/पर सूखी रेत पर चलते भी लगता है भय/याद आ जाती है बाढ़ की नदी/और चलो और/जहां कुछ पानी है वहीं उतारेंगे/वही है सबसे बढ़िया जगह इस श्मशान"2**

आज पर्यावरण प्रदूषण के कारण, मौसम में अनेक बदलाव आ रहे हैं, जैसे कहीं सूखा है, तो कहीं बाढ़ है। आज प्रकृति द्वन्द्व ग्रस्त है, लेकिन प्राकृतिक संतुलन हमें फिर भी हतप्रभ कर देने वाला है। बाढ़ के आगमन के पश्चात की स्थिति का सूक्ष्म निरीक्षण करते हुए कवि कहता है कि–

**"धीरे–धीरे उतरी है बाढ़/पता नहीं कौन सी कोख में/बचा हुआ जीवन/फिर से फेंकता है फंदा/फिर से अपनी जमीन पर लौट रहे हैं लोग बाग/लौट रहे हैं पशु–पक्षी/लौट रहा है सूर्य/लौट रहा है सारा संसार/इस प्रलय के बाद"3**

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2013

कवि आधुनिक उन्नति से अति चिंतित हो जाता है, क्योंकि यांत्रिक संस्कृति के विस्तार ने पर्यावरण एवं अन्य घटकों को बहुत अधिक प्रभावित किया है। यह समय कवि के लिए खतरे का है। कवि गांवों के प्रति अत्यधिक संवेदना प्रकट करता है, वह यह जानता है कि जैसे गांव आधुनिकता की ओर अग्रसर हो रहे हैं, वैसे–वैसे वहां का पर्यावरण असन्तुलित होता जा रहा है, धीरे–धीरे गॉवों का शहरीकरण होता जा रहा है, और गांव नष्ट होते जा रहे हैं। यहां की भोली–भाली जनता अपनी धरती से निष्कासित हो रही है। चाहे हम सिंगूर की बात करें या नंदीगांव की। किसी जगह के भौतिक विकास के पीछे प्रशासक वर्ग का एक रहस्य कार्यक्रम होता है, उनका हित कहीं न कहीं उसमें समाहित होता है। इसी बात को समकालीन कवि अरुण कमल ने यहां स्पष्ट किया है–

**"तुम्हारे गांव तक यह सरकार जो दो हफ्ते में/पक्की सड़क बनवा रही है/खुश मत होवो कि इस पर चलेंगी गाड़ियां/और तुम घण्टे आधे घण्टे में शहर पहुंच जाओगे/और खाने के वक्त तक/वापस घर लौट आओगे/यह भी सोचो कि इसी से होकर/मिनट भर में पहुंचेगी सरकारी फौज/और तुम्हारा गांव राख बन जाएगा"4**

अरुण कमल जी आधुनिक सभ्यता के विकास और भौतिकवाद से प्रतिफलित विनाश की ओर स्पष्ट संकेत करते हैं। वे अपने चारों ओर के वातावरण में होने वाले परिवर्तन और इक्कीसवी शताब्दी में प्रकृति और पर्यावरण को होने वाली हानि से व्यथित हैं। आज हम अपना भौतिक विकास तो कर रहे हैं, लेकिन पर्यावरणीय विनाश की ओर भी अग्रसर हो रहे हैं, वैसे देखा जाए तो हम स्वयं का विनाश कर रहे हैं–**"हर नदी का घाट श्मशान/हर बगीचा कब्रिस्तान बन रहा है/और हम इक्कीसवीं शताब्दी की ओर जा रहे हैं"5**

आधुनिक युग परमाणु और जैविक हथियारों का युग है। बड़े–बड़े महानगरों में विस्फोट की घटना हमें आए दिन सुनने को मिलती है। विश्व युद्ध की विभीषिका के रूप में हिरोशिमा और नागासाकी की घटनाओं से तो आप भलीभांति परिचित होंगे। जिससे समकालीन भारतीय समाज में असुरक्षा की भावना पैदा हो गई है। वैसे यह मनुष्य के साथ–साथ सम्पूर्ण जीव जगत के लिए हानिकारक है, विनाशकारी है। परमाणु बम गिरने से सारे जीव–जन्तु नष्ट हो जाऐंगे और उससे प्राप्त होने वाले जैविक–अजैविक विष से सम्पूर्ण पर्यावरण असंतुलित हो जाएगा–

**"कोई आवाज नहीं/कहीं कोई नजर नहीं आता/आधा दिन बीत गया/कहीं कोई चिड़िया का पूत नहीं/चिड़ियों और अंडों से भरा एक घोंसला/गिरा है सड़क किनारे/एक पल गिलहरी पड़ी है बीच राह पर/सब पेड़ झुलसे हुए/अजीब सन्नाटा है/कैसी दुनिया है यह/मैं कहां चला आया हूं/आंख पर तेज धूप पड़ रही है"6**

आज भारतीय ग्रामीण जीवन से संस्कृति के पुराने चिह्न दिन–ब–दिन मिटते जा रहे हैं, और उसकी जगह बहुमंजिला इमारतें बनावाई जा रही हैं। 'इन नये बसते इलाके में पहुंचे कवि पीपल का पेड़, ढ़हा हुआ घर, जमीन का खाली टुकड़ा ये सब खोजते हैं, अन्त में उन्हें लगता है–

**"यहां रोज कुछ बन रहा है/रोज कुछ घट रहा है/यहां स्मृति का भरोसा नहीं /एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है दुनिया/जैसे वसन्त का गया पतझड़ को लौटा हूं/जैसे वैशाख का गया भादों को लौटा हूं"7**

आज मानव की भौतिक विकास और समृद्धि से जीवन को नया आयाम दे डाला है।

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2013

वैज्ञानिक प्रयासों ने समाज को नए–नए साधन दिए हैं, लेकिन इन साधनों एवं मानवीय ऊर्जा का अनियंत्रित, अतिरेक एवं असम्यक् प्रयोग हुआ है। यह जानकर दुःख होता है कि अपनी विकसित अवस्था में भी मानव हिंसा को छोड़ नहीं पा रहा है। आज मात्र प्राणी विज्ञान के विद्यार्थियों को शिक्षित करने के लिए 150 लाख से अधिक प्राणियों की हत्या कर दी जाती है, युद्धों से चारों तरफ तबाही का मन्जर नजर आ रहा है। जंगल तेजी से कट रहे हैं। नदी, भूमि, सागर जल दूषित होता जा रहा है। ध्वनि, वायु एवं अन्तरिक्ष में प्रदूषण तेजी से बढ़ रहा है। मानव ने कूड़े को अंतरिक्ष तक पहुंचा दिया है। प्रकृति के दोहन का कृत्य इतना भयानक है कि विकासशील देश का एक व्यक्ति तीन वर्षों में जितना भोजन करता है, उससे कहीं अधिक खाद्य सामग्री और सम्बन्धित पदार्थों का कचरा प्रतिवर्ष प्रति व्यक्ति विकसित देशों का उत्पाद है। अमेरिका जैसे विकसित देशों में प्रति व्यक्ति, प्रति वर्ष एक टन से भी अधिक कूड़ा समुद्रों में फेंका जाता है। अरुण कमल एक ऐसे कवि हैं जिनके काव्य में अपनी पीढ़ी के लिए सब कुछ है, वे चिंतित हैं युद्ध की विभीषिकाओं से, महामारियों की भयानकता से, पोलिथीन जैसी विनाशकारी चीजों के दुष्परिणाम से उत्पन्न पर्यावरण असन्तुलन से, ग्लोबल वार्मिंग के कारण समुद्रों के बढ़ते हुए जल स्तर से, भूस्खलन से–

**"सब हमारे लिए/ईसा की बीसवीं शताब्दी की अंतिम पीढ़ी के लिए/वे सारे युद्ध और तबाहियां/मेला उखड़ने के बाद का कचरा महाकारियां/समुद्र में डूबता सबसे प्राचीन बंदरगाह/और टूट कर गिरता सर्वोच्च शिखर/सब हमारे लिए/पोलिथिन थैलियों पर जीवित गांवों का/दूध हमारे लिए"8**

आज समूचा विश्व 'ग्लोबल वार्मिंग' जैसे शब्द से भलीभांति परिचित ही नहीं, उससे उत्पीड़ित भी है। आज कार्बनिक गैसों के उत्सर्जन से हमारे जीवन को सुरक्षा पहुंचाने वाली ओजोन परत में अनेक छिद्र हो गए हैं, धरती का ताप बढ़ता जा रहा है, अरुण कमल भी इस बात से अछूते नहीं हैं, वे जानते हैं कि **"आ रहा है ग्रीष्म/देह का एक–एक रोम अब/खुल रहा है साफ और अलग/नभ इतना खुला और फैलता हुआ/सूरज के डूबने के बाद भी"9** 'अरुण कमल' की दृष्टि में प्रकृति और पर्यावरण पर मनुष्य के साथ–साथ अन्य समस्त प्राणियों का भी समान अधिकार है। लेकिन आज हर मनुष्य प्रकृति और पर्यावरण पर अपना व्यक्तिगत अधिकार जमाता है, और अपनी स्वेच्छा से उसका दोहन कर रहा है। उसके दिमाग में यह बात कदापि नहीं है कि वह इस दोहन से प्रकृति के साथ–साथ उसके समस्त प्राणियों को भी क्षति पहुंचा रहा है, यहां तक कि स्वयं को भी। अरुण कमल कहते हैं–

**"वास्तु शांति नहीं है देवी/जहां तुम्हारा शयन कक्ष है वहीं/ठीक उसके नीचे याद करो/कोई वृक्ष था जामुन का/ नींव पड़ने के पहले/छोटी गुठली वाले काले जामुनों का वृक्ष/वही वृक्ष तुम्हें हिला रहा है/एक पक्षी अभी भी ढूंढता है वहीं अपना नीड़/वे चींटियां खोजती हैं अपना बाल्मीकि/इस ब्रह्मांड में सबका अधिकार है देवी"10**

अंत में हम कह सकते हैं कि समकालीन कविता वास्तव में पर्यावरणीय त्रासदी का युग है, जिसे अरुण कमल ने अपने काव्य का विषय बनाया। अरुण कमल एक ऐसे रचनाकार हैं जिनका जीवन समकालीन परिस्थितियों से अछूता नहीं रहा। और समाकालीन आधुनातन सन्दर्भ में सबसे ज्वलंत मुद्दा है, पर्यावरण को पहुंचने वाली हानि का आकलन एवं संरक्षण और सुरक्षा के उपाय।

अतः उन्होंने समाज में दम घुटे, तनाव ग्रस्त परिवेश के, पर्यावरण के संतुलन और बिगाड़ के काले और सफेद रंग के चित्र अपने काव्य के माध्यम से खींचे हैं। उनके काव्य में पर्यावरणीय बोध का अत्यंत सूक्ष्म और तीक्ष्ण निरीक्षण समाहित है।

**संदर्भ**

1. गंगा को प्यार, अपनी केवल धार : अरुण कमल (अंतरजाल, www.kavitakosh.org)
2. इस शमशान पर, पुतली में संसार : अरुण कमल (अंतरजाल www.kavitakosh.org)
3. फिर से, अपनी केवल धार : अरुण कमल (अंतरजाल, www.kavitakosh.org)
4. उल्टा जमाना, सबूत : अरुण कमल (अंतरजाल, www.kavitakosh.org)
5. इक्कीसवीं शताब्दी की ओर, सबूत : अरुण कमल (अंतरजाल, ww.kavitakosh.org)
6. दुस्वप्न, सबूत : अरुण कमल (अंतरजाल, www.kavitakosh.org)
7. नये इलाके में, नये इलाके में : अरुण कमल (अंतरजाल, www.kavitakosh.org)
8. अपनी पीढ़ी के लिए, पुतली में संसारः अरुण कमल(अंतरजाल www.kavitakosh.org)
9. आतप, पुतली में संसार : अरुण कमल (अंतरजाल www.kavitakosh.org)
10. सुख, नये इलाके में : अरुण कमल (अंतरजाल www.kavitakosh.org)